॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल ।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल ॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज ।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज ॥

॥ चौपाई ॥

जयति जयति शनिदेव दयाला, करत सदा भक्तन प्रतिपाला|
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै । माथे रतन मुकुट छवि छाजै ॥
परम विशाल मनोहर भाला, टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला|
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके, हिये माल मुक्तन मणि दमके ॥

कर में गदा त्रिशूल कुठारा, पल बिच करैं अरिहिं संहारा|
पिंगल, कृष्णों, छाया, नन्दन, यम, कोणस्थ, रौद्र, दुःख भंजन ॥
सौरी, मन्द, शनि, दशनामा, भानु पुत्र पूजहिं सब कामा|
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं, रंकहुं राव करैं क्षण माहीं ॥

पर्वतहू तृण होई निहारत, तृणहू को पर्वत करि डारत|
राज मिलत वन रामहिं दीन्हो, कैकेइहुं की मति हरि लीन्हो ॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई, मातु जानकी गई चतुराई|
लखनहिं शक्ति विकल करिडारा, मचिगा दल में हाहाकारा ॥

रावण की गति मति बौराई, रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई|
दियो कीट करि कंचन लंका, बजि बजरंग बीर की डंका ॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा, चित्र मयूर निगलि गै हारा|
हार नौलाखा लाग्यो चोरी, हाथ पैर डरवायो तोरी ॥

भारी दशा निकृष्ट दिखायो, तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो|
विनय राग दीपक महँ कीन्हों, तब प्रसन्न प्रभु हवै सुख दीन्हों ॥
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी, आपहुं भरे डोम घर पानी|
तैसे नल पर दशा सिरानी, भूंजी-मीन कूद गई पानी ॥

श्री शंकरहि गहयो जब जाई, पार्वती को सती कराई|
तनिक विलोकत ही करि रीसा, नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी, बची द्रोपदी होति उधारी|
कौरव के भी गति मति मारयो, युद्ध महाभारत करि डारयो ॥

रवि कहं मुख महं धरि तत्काला, लेकर कूदि परयो पाताला|
शेष देव-लखि विनती लाई, रवि को मुख ते दियो छुड़ई ॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना, जग दिग्ज गर्दभ मृग स्वाना|
जम्बुक सिंह आदि नख धारी, सो फल ज्योतिष कहत पुकारी ॥

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं, हय ते सुख सम्पत्ति उपजावै|
गर्दभ हानि करै बहु काजा, गर्दभ सिंद्धकर राज समाजा ॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै, मृग दे कष्ट प्राण संहारै|
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी, चोरी आदि होय डर भारी ॥

तैसहि चारि चरण यह नामा, स्वर्ण लौह चाँजी अरु तामा|
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं, धन जन सम्पत्ति नष्ट करावै ॥
समता ताम्र रजत शुभकारी, स्वर्ण सर्वसुख मंगल कारी|
जो यह शनि चरित्र नित गावै, कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै ॥

अदभुत नाथ दिखावैं लीला, करैं शत्रु के नशि बलि ढीला|
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई, विधिवत शनि ग्रह शांति कराई ॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत, दीप दान दै बहु सुख पावत|
कहत राम सुन्दर प्रभु दासा, शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ॥

॥ दोहा ॥

पाठ शनिश्चर देव को, की हों विमल तैयार ।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार ॥